AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF:1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (2), Issue (3), Oct-Dec 2025 **ISSN: 3048-7951**

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

सुरेन्द्र कुमार शर्मा[1] डॉ0 सपना मिश्रा[2]

https://doi.org/10.5281/zenodo.18072871

Review: 19/12/2025 **Acceptance: 21/12/2025** **Publication: 28/12/2025**

सारांशः– माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च,मध्य एवं निम्न) के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन के अन्तर्गत निम्नलिखित निष्कर्ष पाये गये –

1- माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक–बालिका की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

2. माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालकों की तुलना में सार्थक उच्च स्तरीय पाये गए।

3. माध्यमिक स्तर पर विद्याार्थियों के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में समानता पायी गयी।

कुंजी शब्दः– सामाजिक–आर्थिक स्तर ,शैक्षिक उपलब्धि, तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तावनाः– बालक की औपचारिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा से प्रारम्भ होकर मध्य माध्यमिक शिक्षा के बाद उच्च शिक्षा होती है। अतः माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कडी होती है, जो विद्यार्थी जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है, क्योंकि यह किशोरावस्था में दी जाती है। इस काल में ही विद्यार्थी सबसे अधिक तनाव एवं संघर्ष में होता है। समाज में अपने समाजिक–आर्थिक स्तर, शैक्षिक आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि को लेकर भी वह चिन्तित रहता है। समाज में समाजिक–आर्थिक स्तर का निर्धारण उसके माता–पिता के सामाजिक–आर्थिक स्तर से लिया जाता है।

सामाजिक–आर्थिक स्तर की अवधारणाः सामाजिक–आर्थिक स्तर से तात्पर्य व्यक्ति या परिवार की सामाजिक और आर्थिक स्थिति से है, जिसमें आय, माता–पिता की शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक प्रतिष्ठा, जीवन–स्तर, आवासीय स्थिति तथा उपलब्ध सुविधाएँ सम्मिलित होती हैं। यह व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता, अवसरों की उपलब्धता तथा संसाधनों की पहुँच को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। विधार्थी का सामाजिक–आर्थिक स्तर उसके व्यक्तित्व, आत्मधारणा, प्रेरणा, शैक्षिक आकांक्षा तथा शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव डालता है। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर से संबंधित परिवारों के विधार्थिओं को सामान्यतः बेहतर विद्यालय, शिक्षण सामग्री, तकनीकी संसाधन, अनुकूल अध्ययन वातावरण तथा शैक्षिक मार्गदर्शन प्राप्त होता है। इसके विपरीत, निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है,

[1] **शोध छात्र**, Endt. No. Acad./Ph.D/Regs/2023/292, सतत् शिक्षा अध्ययन शाला, सम्राट विक्रमादित्य,विश्वविद्यालय, उज्जैन (म0 प्र0),दूरभाषः–8218485173, Email-dr.sk.sharma7409@gmail.com

[2] प्राचार्या, मा0 इ0 ऑफ एड0 एजूकेशन, सम्राट विक्रमादित्य,विश्वविद्यालय, उज्जैन (म0 प्र0)

AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF:1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (2), Issue (3), Oct-Dec 2025 ISSN: 3048-7951

जैसे– आर्थिक अभाव, अशिक्षित अभिभावक, सीमित शैक्षिक संसाधन, घरेलू दायित्व, कार्य का दबाव तथा असुरक्षित वातावरण। ये सभी कारक उनके शैक्षिक विकास में बाधक सिद्ध होते हैं। साथ ही साथ उनकी शैक्षिक आकांक्षा को प्रभावित करते है।

शैक्षिक उपलब्धि :– शैक्षिक उपलब्धि किसी बालक द्वारा पूरे वर्ष में अर्जित ज्ञान, योग्यता एवं उसकी कार्य कुशलता को ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि माना जाता है। एक निश्चित कार्यक्षेत्र एवं समय सीमा में बालक जो ज्ञान प्राप्त करता है, उसके मापन को उपलब्धि कहते हैं तथा विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विभिन्न विषयों में अर्जित की गई योग्यता को शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं। शैक्षिक उपलब्धि द्वारा विभिन्न पाठ्य विषयों में अर्जित ज्ञान, योग्यता और कार्य कुशलता का मापन होता है।

इवेल के अनुसार – ''उपलब्धि वह अभिकल्प है, जो विद्यार्थी द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान, कुशलता एवं क्षमता का मापन करता है।''[1]
फ्रीमैन के अनुसारः– ''शैक्षिक उपलब्धि किसी निश्चित परिस्थितियों में व्यक्ति द्वारा प्राप्त कुण या योग्यता है जिससे उसके ज्ञान कौशल एवं बोध में वृद्धि होती है।''[2]
थार्नडाइक के अनुसारः– ''शैक्षिक उपलब्धि में हम इस बात को निश्चित करने में रूचि रखते है कि एक विशेष प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के बाद व्यक्ति ने क्या सीखा?[3]
डॉ0 माथुर के अनुसारः– ''शैक्षिक उपलब्धि एक निश्चित कार्य क्षेत्र में अर्जित ज्ञान का मात्रात्मक मापन है।''[4]
गैरीसन एवं अन्य के अनुसारः– ''शैक्षिक उपलब्धि बालक की वर्तमान योग्यता अथवा विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा की प्रगति का मापन करती है।''[5]

चार्ल्स स्किनर के अनुसारः– ''शैक्षिक कार्य का अन्तिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है जो विद्यार्थियों के सीखने के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।'' प्रस्तुत शोध में शैक्षिक उपलब्धि के रूप में कक्षा 9 के विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षा परिणाम को सम्मिलित किया गया है। शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध कार्य करने से पूर्व सामाजिक–आर्थिक स्तर पर कतिपय शोध कार्यों का अध्ययन किया, जिनमें प्रमुख निम्न है– **शॉ, डॉ. सी.(1943)** – ने माता–पिता की सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा छात्र की शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन किया और यह पाया कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि से बुद्धि की तुलना में अधिक निकट का सम्बन्ध है। **सिंह, अवतार (1952)**– ने अपने शोध में छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं परीक्षा के प्राप्तांकों में सार्थक सहसम्बन्ध (0.05स्तर) पाया। माता–पिता की शिक्षा का भी बच्चों के परीक्षा प्राप्तांकों से सार्थक सम्बन्ध था।

शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित शोध कार्यः

राव, डी. सी. (1963):– ने एक अध्ययन किया जिसका शीर्षक ''शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण घटकों का अध्ययन'' था निष्कर्ष पाया कि –

- घर का वातावरण माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।
- शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले सभी घटकों में पिता की आर्थिक स्थिति सम्बन्धी घटक बालक के शैक्षिक विकास को सर्वाधिक प्रभावित करता है।

शर्मा, (1967) – ने अपने अध्ययन उच्च एवं निम्न जाति के बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन में उच्च जाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न जाति के बच्चों की उपलब्धि से अच्छी पायी।

रावत, (1978) – ने पठन–पाठन क्षमता व शैक्षिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध पर एक अध्ययन किया और पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे, शहरी क्षेत्र के बच्चों की तुलना में खराब पठन–पाठन रखतें है।

AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF:1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (2), Issue (3), Oct-Dec 2025 ISSN: 3048-7951

उपर्युक्त शोध कायों का अध्ययन करने के पश्चात शोधार्थी ने **"माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर(उच्च,मध्य एवं निम्न) के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन"** प्रकरण पर शोध करने का निश्चय किया है।

शोध उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
2. माध्यमिक स्तर के मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
3. माध्यमिक स्तर के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

शोध परिकल्पना :–

1. माध्यमिक स्तर के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नही है।
2. माध्यमिक स्तर के मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नही है।
3. माध्यमिक स्तर के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नही है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन विद्यालयी सर्वेक्षण पर आधारित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श चयनविधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक शिक्षा परिषद, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश द्वारा जनपद बुलन्दशहर में संचालित विभिन्न विद्यालयों के माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के 1000 विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया। इस हेतु शोधकर्ता द्वारा बुलन्दशहर के 14 विद्यालयों के बालक–बालिका को लिया गया है। जिनमें 531 बालक तथा 469 बालिकाओं को सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श चयन विधि में यादृच्छिक चयन प्रणाली का उपयोग किया गया है।

शोध उपकरणः–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधार्थी द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्तर को मापने हेतु डॉ0 राजीव लोचन भारद्वाज (अलीगढ) के एस.ई.एस.एस. – बी. आर. स्केल का उपयोग किया गया है। शोधार्थी द्वारा शैक्षिक उपब्धि के मापने हेतु विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षा परिणाम को विद्यालय रिकार्ड से लिया गया है।

प्रद्त्त विश्लेषण एवं व्याख्या :–

प्रस्तुत शोधकार्य का प्रथम उद्देश्य "माध्यमिक स्तर के उच्च सामाजिक दृआर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना" थास इस सन्दर्भ में शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर भारद्वाज द्वारा निर्मित सामाजिक दृआर्थिक स्तर मापनी का प्रशासन किया गया। प्रशासित प्रपत्रों का फलांकन मार्गदर्शिका (Manual) की सहायता से कर प्रद्त्तों को एकत्रित कर लिया गया। प्राप्त प्रद्त्तों का मार्गदर्शिका के आधार पर अध्ययन में सम्मिलित विद्यार्थियों के सामाजिक –आर्थिक स्तर का निर्धारण किया गया सइसी के साथ विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षा के परिणामों की जानकारी विद्यालयीन दस्तावेज से एकत्रित की गई। माध्यमिक स्तर के बालक–बालिकाओं की जानकारी भी विद्यालय से ली गई। माध्यमिक स्तर

के बालक—बालिकाओं की जानकारी भी विद्यालय से ली गई। उच्च सामाजिक—आर्थिक स्तर के बालक—बालिका की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना के लिए टी— परीक्षण का प्रयोग किया गया एवं परिणाम तालिका 4-17 में दिए जा रहे हैं।

तालिका 4-17: उच्च सामाजिक—आर्थिक स्तर के बालक – बालिका की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना के लिए मध्यमान,प्रमाणिक विचलन एवं टी— परीक्षण के मान

लिंग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी का मान
बालक	48	62.71	11.81	0.34
बालिका	64	61.98	10.13	
कुल योग	112			

तालिका 4.17 के अनुसार उच्च सामाजिक—आर्थिक स्तर के बालक – बालिका की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना के लिए टी का मान 0—34 है, जो कि कि t = 110 के लिए किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है, अर्थात उच्च सामाजिक—आर्थिक स्तर के बालक— बालिका की शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक अंतर नही है। अतः प्रस्तुत शोधकार्य की शून्य परिकल्पना ”माध्यमिक स्तर के उच्च सामाजिक दृआर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है”स्वीकृत की जाती है। अर्थात उच्च सामाजिक—आर्थिक स्तर के बालक – बालिका की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।
प्रस्तुत शोधकार्य का व्रितीय उद्देश्य ”माध्यमिक स्तर के मध्यम सामाजिक दृआर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना“ था। इस सन्दर्भ मे शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर भारद्वाज द्वारा निर्मित सामाजिक दृआर्थिक स्तर मापनी का प्रशासन किया गया स प्रशासित प्रपत्रों का फलांकन मार्गदर्शिका (डंदनंस)की सहायता से कर प्रद्त्तों को एकत्रित कर लिया गया स प्राप्त प्रद्त्तों का मार्गदर्शिका के आधार पर अध्ययन में सम्मिलित विद्यार्थियों के सामाजिक—आर्थिक स्तर का निर्धारण किया गया सइसी के साथ विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षा के परिणामों की जानकारी विद्यालयीन दस्तावेज से एकत्रित की गई। माध्यमिक स्तर के बालक—बालिकाओं की जानकारी भी विद्यालय से ली गई। मध्यम सामाजिक—आर्थिक स्तर के बालक – बालिका की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना के लिए टी— परीक्षण का प्रयोग किया गया एवं परिणाम तालिका 4-19 में दिए जा रहे हैं।

तालिका 4-19: मध्यम सामाजिक—आर्थिक स्तर के बालक – बालिका की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी— परीक्षण के मान

लिंग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी का मान
बालक	129	60.58	12.88	*2.08
बालिका	135	64.16	15.04	
कुल योग	264			

0.05 स्तर पर सार्थकः तालिका 4-19 के अनुसार मध्यम सामाजिक—आर्थिक स्तर के बालक—बालिका की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना के लिए टी का मान 02—08 है, जो कि df=262 के लिए 0—0.5 स्तर पर सार्थक है, अर्थात मध्यम सामाजिक—आर्थिक स्तर के बालक—बालिका की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। अतः प्रस्तुत शोधकार्य की शून्य परिकल्पना ”माध्यमिक स्तर के मध्यम सामाजिक—आर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है“ निरस्त की जाती है। अर्थात माध्यमिक स्तर के मध्यम सामाजिक—आर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में समानता पायी गयी। इस सन्दर्भ में मध्यम सामाजिक—आर्थिक स्तर के बालिकाओ की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान (M=64—16) मध्यम सामाजिक—आर्थिक स्तर के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान (M=60—58) से सार्थक उच्च स्तरीय पाए गए। अर्थात

AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF:1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (2), Issue (3), Oct-Dec 2025 ISSN: 3048-7951

मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालकों की तुलना में सार्थक उच्च स्तरीय पायी गयी। मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक–बालिका की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों का यह विवरण ग्राफ 4–14 में दंड आरेख के रूप में दिया जा रहा है।

प्रस्तुत शोधकार्य का तृतीय उद्देश्य "माध्यमिक स्तर के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना" था। इस सन्दर्भ में शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर भारद्वाज द्वारा निर्मित सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी का प्रशासन किया गयां प्रशासित प्रपत्रों का फलांकन मार्गदर्शिका की सहायता से कर प्रद्त्तों को एकत्रित कर लिया गया। प्राप्त प्रद्त्तों का मार्गदर्शिका के आधार पर अध्ययन में सम्मिलित विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का निर्धारण किया गया। इसी के साथ विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षा के परिणामों की जानकारी विद्यालयीन दस्तावेज से एकत्रित की गई। माध्यमिक स्तर के बालक–बालिकाओं की जानकारी भी विद्यालय से ली गई। निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक–बालिका की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया एवं परिणाम तालिका 4. 21 में दिए जा रहे हैं।

निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक–बालिका की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–परीक्षण के मान

लिंग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी का मान
बालक	126	65.96	12.34	1.87
बालिका	142	62.95	14.02	
कुल योग	268			

तालिका 4–21 के अनुसार निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक–बालिका की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना के लिए टी का मान 1–87 है, जो कि df =266 के लिए किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है, अर्थात निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक–बालिका की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः प्रस्तुत शोधकार्य की शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है" स्वीकृत की जाती है। अर्थात माध्यमिक स्तर के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में समानता पायी गयी।

विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों का दंड आरेख

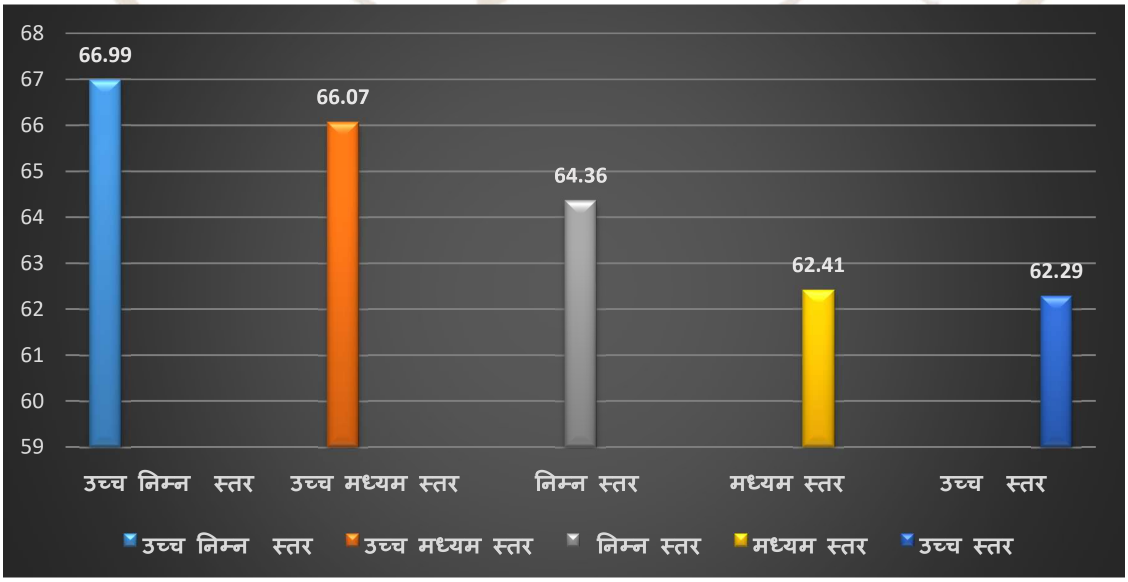

शोध सीमांकनः–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर के एक हजार (1000) विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श हेतु चयनित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल चौदह (14) विद्यालयों के विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श हेतु चयनित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में सभी विद्यार्थी केवल कक्षा 9 (सत्र 2024–25) से सम्बन्धित हैं।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल 531 बालक तथा 469 बालिकाओं को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया है।

सन्दर्भः–

- प्रो0 अरूण कुमार सिंहः उच्चतर मनोविज्ञान प्रयोग एवं परीक्षण, भारती भवन पब्लिकेशन, पटना पृ0 सं0 174
- वही पृ0 सं0 176
- वही पृ0 सं0 177
- वही पृ0 सं0 178
- वही पृ0 सं0 178
- https//shodhganga.inflibnet.ac.in.8443/jspu/handle/10603/71488
- Buch, M.B. Second Survey of research in Education.Volume (1972-79), New Delhi : National Council of Education Research and Training.
- Buch, M.B. Third Survey of research in Education.Volume (1978-83), New Delhi : National Council of Education Research and Training.
- Devenesan, P.P. (1990). Socio-economic status, achievement motivation, and scholastic achievement of higher secondary students in Pasumpon Thevar Thirumagan District. Fifth Survey of Research in Education. New Delhi: N.C.E.R.T... 1997.
- अल्तेकर, ए.एस. (1995) प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, अनुराग प्रकाशन बनारस, वितरक, इंडियन बुक शॉप, बनारस।
- अस्थाना, डॉ. विपिन (2010–11) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- कपिल, डॉ. एच.के., (2012) संख्यिकी के मूल तत्त्व, प्रकाशक, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, कार्यालय : डॉ. रागेय राघव मार्ग, आगरा–2, संस्करण, एकादश संशोधित संस्करण 2012.
- कुमारी मनीषा (2017),''माध्यमिक स्तर पर मलिन बस्तियों के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास का उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति के संदर्भ में अध्ययन।'' शोधपत्र IJRAR Volume 4, June, 2017, E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138.